Pratidhwani the Echo
A Peer-Reviewed International Journal of Humanities & Social Science
ISSN: 2278-5264 (Online) 2321-9319 (Print)
***Impact Factor: 6.28** (Index Copernicus International)*
Volume-IV, Issue-III, January 2016, Page No. 54-62
Published by Dept. of Bengali, Karimganj College, Karimganj, Assam, India
Website: http://www.thecho.in

अजमेर संभाग में प्राथमिक स्तर पर विद्यालय प्रशासन एवं लिंगवार विद्यार्थी नामांकनः एक विकासात्मक अध्ययन

सुरेन्द्र कुमार
शोधार्थी, शिक्षा संकाय, वनस्थली विद्यापीठ, टोंक, राजस्थान
डॉ. मुरलीधर मिश्रा
एसोसिएट प्रोफेसर, शिक्षा संकाय, वनस्थली विद्यापीठ, टोंक, राजस्थान

Abstract

राजस्थान राज्य के अजमेर संभाग में प्राथमिक स्तर पर विद्यालय प्रशासन एवं लिंगवार विद्यार्थी नामांकन की प्रवृत्ति को समझने के लिए विकासात्मक अध्ययन किया गया है। इस अध्ययन में प्राथमिक एवं द्वितीयक दोनों स्रोतों से मात्रात्मक एवं गुणात्मक दोनों प्रकार के प्रदत्तों का संकलन किया गया है। वर्णनात्मक सांख्यिकी के अन्तर्गत आवृत्ति, प्रतिशत एवं रेखाचित्रीय विश्लेषण से यह निष्कर्ष प्राप्त हुआ कि कि राजकीय व अराजकीय दोनों प्रकार के विद्यालयों में विद्यार्थी नामांकन में वृद्धि की प्रवृत्ति सतत् धनात्मक रही है। लेकिन अराजकीय विद्यालयों के विद्यार्थी नामांकन में वृद्धि की प्रवृत्ति राजकीय विद्यालयों के विद्यार्थी नामांकन की तुलना में अधिक रही है। छात्र नामांकन में वृद्धि की प्रवृत्ति जहाँ सामान्य वृद्धि के साथ धनात्मक रही, वहीं छात्रा नामांकन में यह वृद्धि तीव्र धनात्मक रही। कुल आलोच्य अवधि में छात्रा नामांकन की वृद्धि दर छात्र नामांकन की तुलना में अधिक रही।

प्रयुक्त शब्दावलीः *अजमेर संभाग, प्राथमिक शिक्षा स्तर, विद्यालय प्रशासनवार नामांकन, लिंगवार विद्यार्थी नामांकन, विकासात्मक अध्ययन*

राजस्थान राज्य न केवल भौगोलिक वरन सामाजिक एवं सांस्कृतिक रूप से भारत का एक विशिष्ट राज्य है। इन भौगोलिक, सामाजिक एवं सांस्कृतिक वैशिष्ट्यों ने जहाँ इसे देश–विदेश में पहचान दिलायी है, वहीं शैक्षिक दृष्टि से पिछड़ने में भी अकिंचित भूमिका निभाई है। स्वाधीनता प्राप्ति से अद्यपर्यन्त यहाँ साक्षरता वृद्धि दर बहुत धीमी रही है। 1986 की शिक्षा नीति के पश्चात् प्राथमिक शिक्षा की स्थिति में सुधार के लिए राजस्थान राज्य में कई महत्त्वपूर्ण योजनाएँ आयी और हुई हद तक सफल भी रही हैं। शिक्षा सबके लिए, शिक्षा आपके द्वार, जिला प्राथमिक शिक्षा कार्यक्रम एवं नवीन लब्धि शिक्षा का अधिकार अधिनियम के क्रियान्वयन के पश्चात् शिक्षण संस्थाओं का प्रसार गाँव और ढ़ाणी तक फैल गया है। मध्याह्न भोजन एवं विविध प्रोत्साहक योजनाओं के बावजूद भी नामांकन में आशातीत प्रगति नहीं हो पायी है। राज्य की हालत स्वतंत्रता प्राप्ति के पश्चात् जनसंख्या की तीव्र वृद्धि, महिलाओं की प्रस्थिति व बालिका शिक्षा की दृष्टि से आज भी दयनीय है। कतिपय क्षेत्र ऐसे भी हो सकते हैं जहाँ सुशिक्षित महिला नहीं हो।

राजस्थान राज्य के हृदयस्थल अजमेर संभाग के शहरी क्षेत्रों में व्यापार तथा अन्य रोजगार मुख्य व्यवसाय हैं। जबकि ग्रामीण क्षेत्रों में अधिकांश जनसंख्या कृषि, पशुपालन तथा दिहाड़ी मजदूरी पर आश्रित है। यहाँ समाज में नाता–प्रथा, नुक्ता–प्रथा, बाल–विवाह तथा डायन–प्रथा जैसी मुख्य विकृतियों के अलावा जादू–टोने, जंतर–मंत्र जैसे अंधविश्वासों के उदाहरण भी प्रकाश में आते हैं।

संभाग में स्थित अजमेर जिला प्राचीन काल से ही शिक्षा के क्षेत्र में राज्य का प्रमुख केन्द्र रहा है। जनगणना 2001 के अनुसार अजमेर जिले का साक्षरता प्रतिशत 64.65 है जिनमें पुरूषों का 79.37 प्रतिशत व महिलाओं का

48.86 प्रतिशत है। अजमेर जिले को राजस्थान का प्रथम पूर्ण साक्षर जिला घोषित किया गया है और प्रथम पूर्ण साक्षर ग्राम मसूदा भी इसी जिले में आता है। इस जिले को शिक्षा के क्षेत्र में उल्लेखनीय कार्य करने के लिए 8 सितम्बर 2004 को सत्यन मैत्रेय पुरस्कार प्रदान किया गया है। भीलवाड़ा जिले की कुल साक्षरता दर 50.74 प्रतिशत है जिसमें पुरूष साक्षरता दर 67.39 प्रतिशत व महिला साक्षरता दर 33.48 प्रतिशत है पुरूषों के न्यूनतम साक्षरता वाले पाँच जिलों में भीलवाड़ा का पाँचवां स्थान है। नागौर जिले की जनगणना 2001 के अनुसार कुल साक्षरता प्रतिशत 57.28 है जिनमें पुरूष 74.10 प्रतिशत तथा महिला 39.67 प्रतिशत है। टोंक जिले की कुल साक्षरता दर 51.97 प्रतिशत है जिसमें पुरूष साक्षरता दर 70.52 प्रतिशत तथा महिला साक्षरता 32.45 प्रतिशत है जो राजस्थान राज्य में महिलाओं के सन्दर्भ में देखा जाये तो पाँच न्यूनतम साक्षरता वाले जिलों में टोंक का पाँचवा स्थान है। संभाग स्तर पर समग्र रूप से देखा जाये तो पता चलता है कि संभाग में कुल साक्षर जनसंख्या 38096. 04 है जिनमें 2522035 पुरूष तथा 1287569 महिलाएँ हैं। अजमेर संभाग की सामाजिक एवं सांस्कृतिक पृष्ठभूमि को देखने पर यह पता चलता है कि यहाँ पर विविध जातियाँ निवास करती हैं।

प्राथमिक शिक्षा स्तर से सम्बन्धित विकासात्मक अध्ययनों में बिर्दी (1992), पाल (1995), प्रकाश (1996), शर्मा (1997), सिंह (1997), अग्रवाल (2001), चढ़ा (2001), मेहरोत्रा (2005), त्रिपाठी (2006), खरे (2008), प्रधान (2008), शर्मा (2012), मिश्रा (2013) ने अपने अध्ययनों में इस स्तर पर हुए शैक्षिक विकास को अध्ययन का विषय बनाया है। अधिकतर शोध अध्ययनों में शैक्षिक विकास के प्रमुख संकेतकों के रूप में विद्यार्थी नामांकन की प्रवृत्ति को शामिल किया। शैक्षिक विकास के एक संकेतक के रूप में पाल (1995), गोयल (1997), शर्मा (1997), अग्रवाल (2001), सुराणा (2003), कुकरेती (2004), कमल (2005), चौहान (2011), पाराशर (2011), कुमारी (2013) एवं मिश्रा (2013) ने विद्यार्थी नामांकन की प्रवृत्ति का अध्ययन किया है। ऐसे में राजस्थान राज्य के 1991 से 2010 तक अजमेर संभाग में राजकीय प्राथमिक विद्यालयों में कुल विद्यार्थी नामांकन की प्रवृत्ति कैसी रही है? इस अवधि में निजी प्राथमिक विद्यालयों में कुल विद्यार्थी नामांकन की प्रवृत्ति कैसी रही है? संभाग स्तर पर प्राथमिक विद्यालयों में विद्यार्थी नामांकन बढ़ाने के क्रम में राजकीय प्रयासों की क्या भूमिका रही है? निजी क्षेत्र ने विद्यार्थी नामांकन बढ़ाने के लिए क्या प्रयत्न किये हैं? क्या सम्पूर्ण सम्भाग में लैंगिक आधार पर प्राथमिक विद्यालयीन नामांकन में विकास की प्रवृत्ति एक समान रही है? जैसे प्रश्नों एवं स्थितियों को दृष्टिगत रखकर शोधकर्ता द्वय ने प्राथमिक विद्यालयीन स्तर पर विद्यार्थी नामांकन की प्रवृत्ति का प्रशासन एवं लिंगवार अध्ययन करने का निश्चय किया।

अध्ययन के उद्देश्य :

सम्प्रत्ययात्मक पृष्ठभूमि तथा सम्बद्ध साहित्य की विवेचना के आधार पर प्रस्तुत अध्ययन के निम्न उद्देश्य निर्धारित किये गये हैं–

1. अजमेर संभाग में स्थित प्राथमिक विद्यालयों में 1991 से 2010 तक प्रशासन के आधार पर कुल विद्यार्थी नामांकन की प्रवृत्ति का अध्ययन करना।
2. अजमेर संभाग में स्थित प्राथमिक विद्यालयों में 1991 से 2010 तक लिंग के आधार पर कुल विद्यार्थी नामांकन की प्रवृत्ति का अध्ययन करना।
3. अजमेर संभाग में शैक्षिक योजनाओं एवं कार्यक्रमों के सन्दर्भ में प्राथमिक स्तर पर प्रशासन एवं लिंगवार विद्यार्थी नामांकन की प्रवृत्ति का अध्ययन करना।
4. प्राथमिक स्तर पर प्रशासन एवं लिंगवार कुल विद्यार्थी नामांकन की प्रवृत्ति के सन्दर्भों के विषय में विशेषज्ञों की प्रतिक्रियाओं का अध्ययन करना।

अध्ययन का परिसीमन :

शोधकर्ताओं के समक्ष समय एवं संसाधनों की सीमित उपलब्धता, क्षेत्र की व्यापकता, सुविधाओं, शोधकार्य की निरन्तरता को ध्यान में रखते हुए प्रस्तुत शोध अध्ययन का परिसीमन इस प्रकार किया गया है–

1. प्रस्तुत अध्ययन में अजमेर संभाग में 1991 से 2010 औपचारिक शिक्षा के राजकीय व मान्यता प्राप्त निजी प्राथमिक विद्यालयों में नामांकन के प्रदत्तों को लिया गया है।

2. प्रस्तुत अध्ययन में अजमेर संभाग में प्राथमिक विद्यालयों में नामांकन का अध्ययन लिंग एवं प्रशासन के संदर्भ में किया गया है।

अध्ययन विधि : प्रस्तुत अध्ययन का प्रमुख उद्देश्य अजमेर संभाग में 1991 से 2010 तक प्राथमिक विद्यालयीन स्तर पर प्रशासन एवं लिंगवार विद्यार्थी नामांकन की प्रवृत्ति का अध्ययन करना था। आलोच्य अवधि में प्राथमिक विद्यालयीन स्तर पर विद्यार्थी नामांकन की प्रवृत्ति का प्रशासन एवं लिंगवार अध्ययन होने के कारण यह अध्ययन वर्णनात्मक प्रकार का है। प्रशासन एवं लिंगवार नामांकन को एक इकाई के रूप में लेने पर यह एक वैयक्तिक अध्ययन है तथा अतीत और वर्तमान से सम्बन्धित व अवधि में चर विशेषों पर नामांकन की प्रवृत्ति का विश्लेषण होने के कारण यह एक विकासात्मक अध्ययन है।

न्यादर्श : इस अध्ययन में अजमेर संभाग में 1991 से 2010 तक सभी शैक्षिक स्तरों (प्रारम्भिक, माध्यमिक एवं उच्च) पर प्रशासन एवं लिंगवार विद्यार्थी नामांकन में से एक इकाई प्राथमिक विद्यालयों में विद्यालय प्रशासन एवं लिंगवार नामांकन (1991–2010) को शैक्षिक शोध अध्ययन की सौद्देश्यपूर्ण न्यादर्शन विधि से न्यादर्श हेतु चुना गया। विद्यालय प्रशासन एवं लिंगवार विद्यार्थी नामांकन की प्रवृत्ति के विशेष सन्दर्भ समझने के लिए विशेषज्ञों की प्रतिक्रियाओं का अध्ययन करने के लिए विशेषज्ञ के रूप में 10 शिक्षाविदों, 3 शिक्षा अधिकारियों, आरम्भिक विद्यालयीन स्तर से सम्बद्ध 10 प्रधानाध्यापकों एवं 20 शिक्षकों का चयन भी न्यादर्शन की सौद्देश्यपूर्ण विधि से किया गया।

अध्ययन उपकरण : प्रस्तुत अध्ययन में शोध उपकरण के क्रम में आवश्यक प्रदत्तों का संकलन करने के लिए शोधकर्ता द्वय द्वारा प्रदत्तों की आवश्यकता एवं उपलब्धता के अनुसार निरूपित प्रारूपों का उपयोग किया गया है। तृतीय उद्देश्य की पूर्ति के लिए शैक्षिक योजनाओं एवं कार्यक्रमों तथा चतुर्थ उद्देश्य की पूर्ति के लिए विशेषज्ञों की प्रतिक्रियाओं का संकलन करने के लिए क्रमशः 'शैक्षिक योजना एवं कार्यक्रम विवरण प्रपत्र' और 'संरचित साक्षात्कार प्रपत्रों' का विकास किया गया।

प्रदत्त विश्लेषण प्रक्रिया : इस शोध अध्ययन में मुख्यतया समय श्रेणी प्रदत्तों (संख्यात्मक) का प्रयोग किया गया है। अजमेर संभाग में 1991 से 2010 प्राथमिक विद्यालयों में नामांकन का विश्लेषण एवं व्याख्या निर्दिष्ट चरों लिंग (छात्र और छात्रा) एवं विद्यालय प्रशासन/संगठन की प्रकृति (राजकीय व अराजकीय) के संदर्भ में करते हुए शोध निष्कर्ष प्राप्त किये गये। अजमेर संभाग में प्राथमिक विद्यालयों में विद्यालय प्रशासन एवं लिंगवार नामांकन के चरों के संख्यात्मक प्रदत्तों के विश्लेषण हेतु का सारणीयन किया गया। इन सारणियों के प्रदत्तों का विद्यालय प्रशासन एवं लिंगवार विश्लेषण एवं व्याख्या करने की सुविधा के लिए संगणक की सहायता से तीन–तीन वर्ष के अन्तराल पर छः (6) समय श्रेणी बिन्दुओं (1991–92, 1994–95, 1997–98, 2000–01, 2003–04, 2006–07, 2009–10) को लिया जाना था। लेकिन अध्ययनकर्ता द्वय को वर्ष 1991 से वर्ष 1993 तक के प्रदत्त अथक् प्रयासों के बावजूद भी उपलब्ध नहीं हो सके। अतः शोध अध्ययन की आन्तरिक वैद्यता को देखते हुए 'समय श्रेणी विश्लेषण' का आरम्भ सत्र 1994–95 से किया गया और पाँच समय श्रेणी बिन्दुओं को प्रदर्शित करने के लिए पार्श्व चित्रों (रेखाचित्रीय प्रस्तुतीकरण) का निर्माण किया गया है। चूँकि अध्ययन की वास्तविक आलोच्य अवधि का विस्तार 1994 से 2010 तक रहा, इसलिए विद्यालय प्रशासन एवं लिंगवार नामांकन का दशकीय विकास जानने के लिए वास्तविक आलोच्य अवधि को दो तार्किक कालखण्डों 1994–2000 को प्रथम/पहला दशक एवं 2001–2010 को द्वितीय दशक के रूप में बाँटा गया। इस प्रशासन एवं लिंगवार विद्यार्थी नामांकन की प्रवृत्ति की व्याख्या करने के पश्चात् शैक्षिक योजनाओं एवं कार्यक्रमों तथा विषय विशेषज्ञों की प्रतिक्रियाओं की सहायता से निष्कर्ष–विवेचना की गयी है।

विद्यालय प्रशासनवार विद्यार्थी नामांकन : अजमेर संभाग के प्राथमिक विद्यालयों में नामांकन को प्रशासन के आधार पर राजकीय व अराजकीय विद्यालयों में वर्गीकृत करके विश्लेषित किया गया है। प्राथमिक विद्यालयों में नामांकन को प्रशासन के आधार पर राजकीय व अराजकीय विद्यालयों नामांकन से संबंधित समय श्रेणी प्रदत्तों के आधार पर रेखाचित्र 1 और सारणी 1 का निर्माण किया गया है।

रेखाचित्र 1

अजमेर संभाग के प्राथमिक विद्यालयों में प्रशासन के आधार पर नामांकन

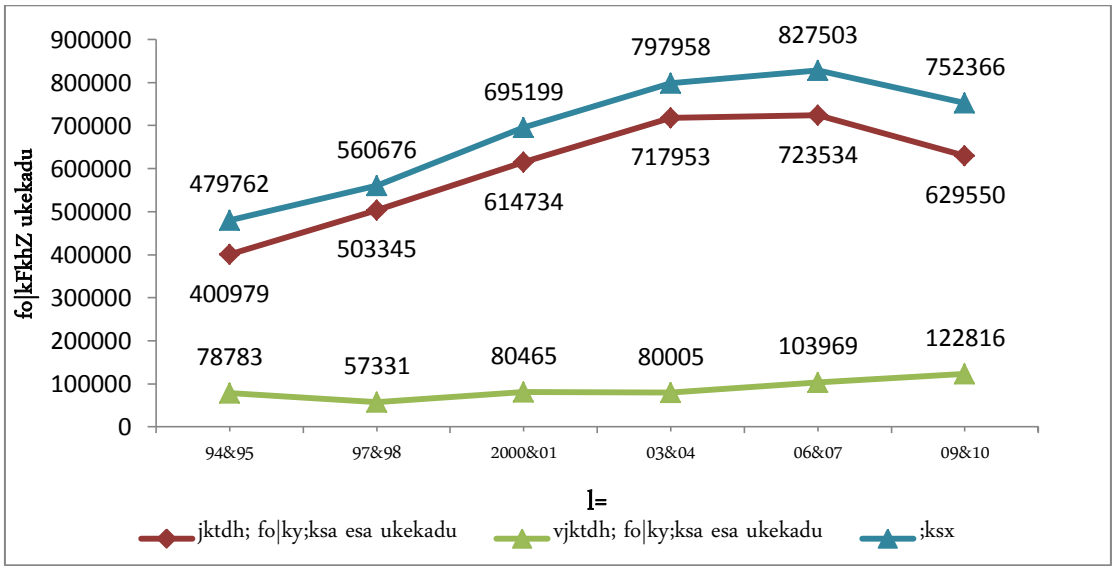

सारणी 1

अजमेर संभाग के प्राथमिक विद्यालयों में प्रशासन के आधार पर नामांकन

वर्ष	राजकीय			अराजकीय		
	राजकीय विद्यालयों में नामांकन संख्या	नामांकन संख्या में वृद्धि/कमी	वृद्धि दर	अराजकीय विद्यालयों में नामांकन संख्या	नामांकन संख्या में वृद्धि/कमी	वृद्धि दर
1991–92	–	–	–	–	–	–
1994–95	400979	–	–	78783	–	–
1997–98	503345	102366	25.53	57331	–21452	–27.23
2000–01	614734	111389	22.13	80465	23134	40.35
2003–04	717953	103219	16.79	80005	–460	–0.57
2006–07	723534	5581	0.78	103969	23964	29.95
2009–10	629550	–93984	–12.99	122816	18847	18.13
कुल वृद्धि दर						
वर्ष	राजकीय नामांकन में वृद्धि/कमी		वृद्धि दर	अराजकीय नामांकन में वृद्धि/कमी		वृद्धि दर
1994–2010	228571		57.00	104033		132.05
दशकीय वृद्धि दर						
1994–2000	213755		53.31	1682		2.13
2001–2010	–33473		–50.49	102778		128.41

उपर्युक्त रेखाचित्र एवं सम्बन्धित सारणी 1 का अध्ययन करने से ज्ञात होता है कि अजमेर संभाग में राजकीय प्राथमिक विद्यालयों में विद्यार्थी नामांकन में वृद्धि की प्रवृत्ति बिन्दु वर्ष 2009–10 को छोड़कर अन्य बिन्दु वर्षों में सतत् धनात्मक रही है। राजकीय प्राथमिक विद्यालयों में सर्वाधिक वृद्धि की प्रवृत्ति बिन्दु वर्ष 1997–98 में धनात्मक रही वहीं बिन्दु वर्ष 2009–10 में राजकीय विद्यालयों में विद्यार्थी नामांकन में वृद्धि की प्रवृत्ति सर्वाधिक कमी के साथ ऋणात्मक दर्ज की गयी है। अराजकीय विद्यालयों के विद्यार्थी नामांकन में वृद्धि की प्रवृत्ति बिन्दु वर्ष 1997–98 व बिन्दु वर्ष 2003–04 को छोड़कर शेष बिन्दु वर्षों में वृद्धि की प्रवृत्ति अनियमित रूप से उतार–चढ़ाव के साथ धनात्मक रही है। बिन्दु वर्ष 2000–01 में विद्यार्थी नामांकन में वृद्धि की प्रवृत्ति तीव्र धनात्मक दर्ज की गई। बिन्दु वर्ष 1997–98 में वृद्धि की प्रवृत्ति गिरावट के साथ ऋणात्मक रही है। प्रथम दशक में राजकीय प्राथमिक विद्यालयों के नामांकन में वृद्धि की प्रवृत्ति तुलनात्मक रूप से अधिक तीव्र रही है। इसी प्रकार द्वितीय दशक में राजकीय प्राथमिक विद्यालयों के नामांकन में वृद्धि की प्रवृत्ति ऋणात्मक रही वहीं अराजकीय प्राथमिक विद्यालयों के नामांकन में वृद्धि की प्रवृत्ति तीव्र धनात्मक रही है। आलोच्य अवधि में राजकीय व अराजकीय विद्यालयों के विद्यार्थी नामांकन में वृद्धि की प्रवृत्ति सतत् धनात्मक रही है। परन्तु राजकीय विद्यालयों के विद्यार्थी नामांकन में वृद्धि की तुलना में अराजकीय विद्यालयों के विद्यार्थी नामांकन में वृद्धि की प्रवृत्ति अधिक रही है।

विशेषज्ञों के अनुसार बिन्दु वर्ष 1997–98 में अजमेर संभाग के राजकीय प्राथमिक विद्यालयों में नामांकन वृद्धि का मुख्य कारण अराजकीय विद्यालयों का कम होना, अभिभावकों द्वारा शिक्षा के प्रति जागरूक होना, राजकीय विद्यालयों में गुरू–मित्र शिक्षकों द्वारा प्रभावी शिक्षण करवाना रहे हैं। वर्ष 2009–10 में राजकीय प्राथमिक विद्यालयों के नामांकन में कमी का प्रमुख कारण प्राथमिक विद्यालयों का उच्च प्राथमिक विद्यालयों में क्रमोन्नत होना व छात्रों का निजी विद्यालयों के प्रति रूझान अधिक होना रहे हैं। अजमेर संभाग के अराजकीय प्राथमिक विद्यालयों में बिन्दु वर्ष 2000–01 में विद्यार्थी नामांकन में वृद्धि की प्रवृत्ति का मुख्य कारण निजी विद्यालयों की संख्या में वृद्धि, निजी विद्यालयों में भौतिक सुविधाओं की पर्याप्तता, प्रवेशोत्सव कार्यक्रम व अभिभावकों का निजी विद्यालयों के प्रति रूझान अधिक होना रहा है। बिन्दु वर्ष 1997–98 में अराजकीय विद्यालयों में विद्यार्थी नामांकन में कमी का मुख्य कारण निजी विद्यालयों की कमी एवं विद्यार्थियों में शिक्षा के प्रति रूचि कम होना माना गया है।

लिंग के आधार पर नामांकन की प्रवृत्ति : अजमेर संभाग के प्राथमिक विद्यालयों में नामांकन को लिंग के आधार पर छात्र व छात्रा में वर्गीकृत किया गया है। छात्र व छात्रा नामांकन से संबंधित समय श्रेणी प्रदत्तों के आधार पर रेखाचित्र 2 और सारणी 2 का निर्माण किया गया है।

रेखाचित्र 2
अजमेर संभाग के प्राथमिक विद्यालयों में लिंग के आधार पर नामांकन

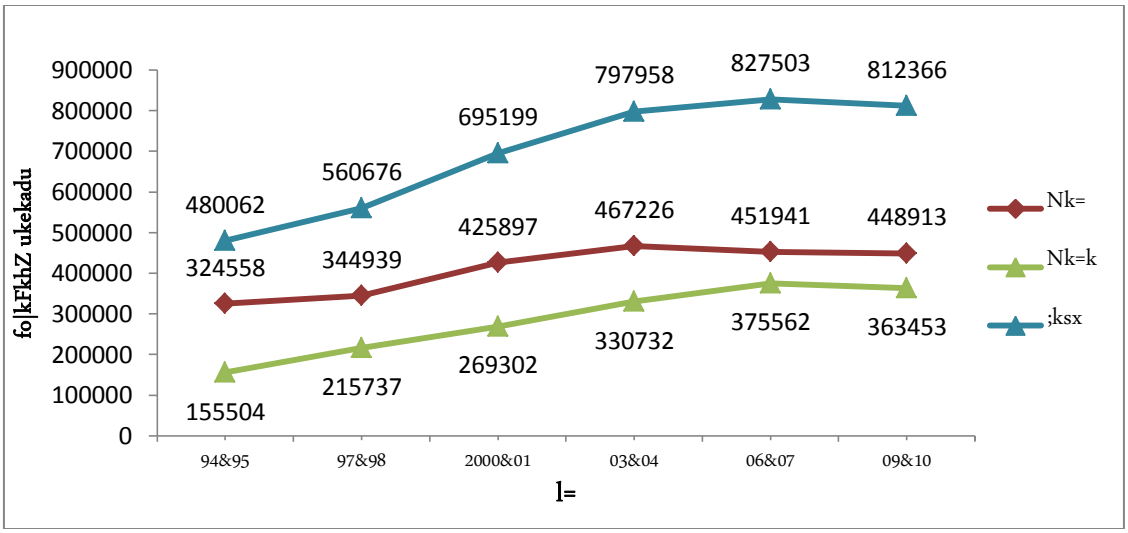

सारणी 2
अजमेर संभाग के प्राथमिक विद्यालयों में लिंग के आधार पर नामांकन

वर्ष	छात्र			छात्रा		
	छात्र संख्या	वृद्धि/कमी	वृद्धि दर	छात्रा संख्या	वृद्धि/कमी	वृद्धि दर
1991–92	–	–	–	–	–	–
1994–95	324558	–	–	155504	–	–
1997–98	344939	20681	6.38	215737	60233	38.73
2000–01	425897	80958	23.47	269302	53565	24.83
2003–04	467226	41329	9.70	330732	61430	22.81
2006–07	451941	–15285	–3.27	375562	44830	13.55
2009–10	448913	–3028	–0.67	363453	–12109	–3.22
कुल वृद्धि दर						
वर्ष	**छात्र संख्या में वृद्धि**		**वृद्धि दर**	**छात्रा संख्या में वृद्धि**		**वृद्धि दर**
1994–2010	124655		38.44	207949		133.73
दशकीय वृद्धि दर						
1994–2000	101639		31.35	113798		73.18
2001–2010	402		0.09	68903		23.39

रेखाचित्र एवं सम्बन्धित सारणी 2 के अध्ययन से ज्ञात होता है कि अजमेर संभाग में प्राथमिक विद्यालयों में लिंग के आधार पर छात्र नामांकन में वृद्धि की प्रवृत्ति बिन्दु वर्ष 2006–07 एवं 2009–10 को छोड़कर अन्य बिन्दु वर्षों में छात्र नामांकन में वृद्धि की प्रवृत्ति सामान्य उतार–चढ़ा के साथ धनात्मक रही है। बिन्दु वर्ष 2000–01 में प्राथमिक विद्यालयों में छात्र नामांकन में वृद्धि की प्रवृत्ति सर्वाधिक धनात्मक रही है। वहीं बिन्दु वर्ष 2006–07 में छात्र नामांकन में सर्वाधिक गिरावट आयी तथा वृद्धि की प्रवृत्ति ऋणात्मक रही है।प्राथमिक विद्यालयों में छात्रा नामांकन में वृद्धि की प्रवृत्ति बिन्दु वर्ष 2009–10 को छोड़कर अन्य बिन्दु वर्षों में उतार–चढ़ाव के साथ धनात्मक दर्ज की गयी है। बिन्दु वर्ष 1997–98 में प्राथमिक विद्यालयों में छात्रा नामांकन में वृद्धि की प्रवृत्ति सर्वाधिक तीव्र धनात्मक रही वहीं बिन्दु वर्ष 2009–10 में छात्रा नामांकन में वृद्धि की प्रवृत्ति में कमी आयी तथा वृद्धि दर ऋणात्मक रही। प्रथम एवं द्वितीय दोनों दशकों में प्राथमिक विद्यालय के छात्र नामांकन की तुलना में छात्रा नामांकन में वृद्धि की प्रवृत्ति अधिक पायी गयी है। द्वितीय दशक की बजाय प्रथम दशक में यह वृद्धि की प्रवृत्ति अधिक देखने में आयी है। कुल आलोच्य अवधि में छात्र नामांकन में वृद्धि की प्रवृत्ति सामान्य वृद्धि के साथ धनात्मक रही वहीं छात्रा नामांकन की वृद्धि की प्रवृत्ति तीव्र वृद्धि के साथ धनात्मक रही है। आलोच्य अवधि में छात्र नामांकन की तुलना में छात्रा नामांकन में अधिक वृद्धि की प्रवृत्ति रही है।

अजमेर संभाग के प्राथमिक विद्यालयों के विद्यार्थी नामांकन में बिन्दु वर्ष 2000–01 में छात्र नामांकन में तीव्र वृद्धि की प्रवृत्ति रही है जिसका मुख्य कारण दूर–दराज के गाँवों में विद्यालय सुविधा का उपलब्ध होना जिसमें राजीव गाँधी पाठशालाएँ मुख्य हैं, निःशुल्क पाठ्यपुस्तकों का वितरण, प्रवेशोत्सव कार्यक्रम, चाइल्ड ट्रेकिंग सर्वे, विद्यालय में मध्याह्न का भोजन उपलब्ध करवाना आदि रहे हैं। इसी प्रकार बिन्दु वर्ष 2006–07 में छात्र नामांकन में वृद्धि की प्रवृत्ति ऋणात्मक रही जिसका मुख्य कारण विद्यालयों का क्रमोन्नत होना, ग्रामीण क्षेत्र में बच्चों का ड्रॉप आउट होना आदि रहे हैं। इसी प्रकार छात्रा नामांकन में अधिक वृद्धि की प्रवृत्ति बिन्दु वर्ष 1997–98 में रही है जिसका मुख्य कारण सरकार द्वारा बालिका शिक्षा को बढ़ावा देने हेतु जोर देना, गुरू मित्र शिक्षा कार्यक्रम,

प्रवेशोत्सव कार्यक्रम तथा अभिभावकों का बालिका शिक्षा के प्रति सोच में बदलाव आदि रहे हैं। इसी प्रकार बिन्दु वर्ष 2009–10 में छात्रा नामांकन में वृद्धि की प्रवृत्ति ऋणात्मक रही जिसका मुख्य कारण समस्त छात्रा प्राथमिक विद्यालयों को उच्च प्राथमिक विद्यालयों में क्रमोन्नत करना व शाला परित्याग आदि रहे हैं। नामांकन को बढ़ाने हेतु शाला परित्याग की समस्या का पता कर इसे कम करने की जरूरत है।

शैक्षिक निहितार्थ : अजमेर संभाग में निजी विद्यालयों में छात्राओं का अनुपात छात्रों की अपेक्षा कम है अराजकीय विद्यालयों की इन कक्षाओं में छात्राओं की संख्या कम होना प्रदर्शित करता है कि इस आधुनिक युग में भी अभिभावक लड़के और लड़कियों में भेदभाव करते हैं। इस भेदभाव के चलते ये अपनी आर्थिक सीमाओं का उपयोग केवल लड़कों को गुणवता पूर्ण शिक्षा देने के लिए करना चाहते हैं। लड़के और लड़कियों में भेदभाव की प्रवृत्ति पर प्रभावी रोक लगाने के लिए जन शिक्षण के क्रम में महिला आयोग, केन्द्र व राज्य सरकार, स्वयंसेवी संगठन, मीडिया एवं समाज के बुद्धिजीवी वर्ग की विशेष भूमिका हो सकती है। महिलाओं की व्यावसायिक, सामाजिक एवं राजनीतिक भागीदारी बढ़ाने से भेदभाव की प्रवृत्ति पर प्रभावी रोक लग सकती है।

अजमेर संभाग में निजी विद्यालयों की प्राथमिक कक्षाओं में छात्राओं के नामांकन छात्रों से कम है। यह सुखद नहीं है। निजी विद्यालयों की प्राथमिक कक्षाओं में प्राथमिक कक्षाओं में छात्राओं का अनुपात बढ़ाये जाने के लिए सुनियोजित प्रयास करने की आवश्यकता है। इसके लिए सरकार द्वारा आवश्यकतानुसार कमजोर आर्थिक स्थिति वाले लोगों के निवास स्थानों–कच्ची बस्तियों, ग्राम व ढ़ाणियों के नज़दीक नये बालिका विद्यालयों की स्थापना की जा सकती है। शिक्षक इस स्तर पर वैयक्तिक प्रयासों द्वारा छात्रा नामांकन बढ़ा सकते हैं।

केन्द्र व राज्य सरकार ने अजमेर संभाग में प्रशासन एवं लिंगवार विद्यार्थी नामांकन बढ़ाने के लिए आरम्भिक स्तर पर कई प्रोत्साहक योजनाएँ तथा कार्यक्रम संचालित किये गये हैं। इनमें से प्रमुख योजना और कार्यक्रम–सर्व शिक्षा अभियान, राजकीय विद्यालयों में विभिन्न वर्गों के विद्यार्थियों को दी जाने वाली छात्रवृत्तियाँ, परीक्षा प्रणाली में सुधार, निःशुल्क पाठ्यपुस्तक, कम्प्यूटर शिक्षा कार्यक्रम, रेडियो प्रसारण कार्यक्रम, इंस्पायर अवार्ड, शारीरिक शिक्षा एवं सहशैक्षिक प्रवृत्तियाँ, बाल गणेश चिंरजीवी योजना, चाइल्ड ट्रेकिंग सिस्टम, मध्याह्न भोजन, लहर कार्यक्रम, गुरू–मित्र योजना, विद्यार्थी मित्र योजना, शाला प्रवेशोत्सव कार्यक्रम, शिक्षा आपके द्वार योजना तथा सुरक्षा बीमा योजना हैं। प्रशासन एवं लिंगवार विद्यार्थी नामांकन बढ़ाने हेतु इन योजनाओं एवं कार्यक्रमों का नियोजन व क्रियान्वयन पर्याप्त सावधानी से होना चाहिए। अजमेर संभाग में प्राथमिक शिक्षा के स्तर पर अनेक का निर्माण किया गया है। इस संभाग में संचालित महत्वपूर्ण कार्यक्रमों व योजनाओं से नामांकन वृद्धि की दर बढ़ाने में सहायता प्राप्त हुई है। प्रशासन एवं लिंगवार विद्यार्थी नामांकन हेतु योजनाओं एवं कार्यक्रमों की निर्मिति अजमेर संभाग की तात्कालिक और दीर्घकालिक आवश्यकताओं तथा शैक्षिक गुणवत्ता को दृष्टिगत रख कर होनी चाहिए।

संभाग में आरम्भिक शिक्षा के क्षेत्र में बालिका नामांकन को बढ़ावा देने हेतु आरम्भिक स्तर पर पुस्तक बैंकों का सुदृढ़ीकरण, बालिकाओं को निःशुल्क वेषभूषा देना, व्यावसायिक शिक्षा, विभिन्न प्रकार की छात्रवृत्तियाँ, कस्तूरबा गाँधी बालिका आवासीय योजना, आपकी बेटी योजना, पोथी घर योजना, सरस्वती योजना, शैक्षिक भ्रमण योजना, उपस्थिति पुरस्कार योजना व नेशनल प्रोग्राम ऑफ एजुकेशन फॉर गर्ल्स एट् एलीमेन्ट्री लेवल (एन.पी.ई.जी.ई.एल.) जैसी योजनाओं का सुनियोजित विस्तार किया जाना चाहिए ताकि बालिका नामांकन एवं ठहराव में और अधिक वृद्धि हो सके। राजकीय एवं निजी विद्यालयों की संख्या को बढ़ाकर विद्यार्थी नामांकन में और सुधार का लक्ष्य अर्जित किया जा सकता है।

सन्दर्भ सूची :

- बिर्दी, बिमलेश (1992), ए स्टडी ऑफ द ग्रोथ एण्ड डेवलपमेन्ट ऑफ द प्राइमरी एजुकेशन इन पंजाब फ्रॉम 1947 टू 1987, पीएच.डी. (एजुकेशन), पंजाबी यूनिवर्सिटी 1134.
- चौधरी, लतिका (2009), टेक्सेशन एण्ड एज्यूकेशनल डवलपमेन्ट : एविडेन्सेज फ्रॉम ब्रिटिश इण्डिया, एक्सप्लोरेशन इन इकोनोमिक हिस्ट्री, 47 (3), जुलाई 2010, 279–213.
- देव, एस, महेन्द्र (2012–13), इण्डियन डवलपमेन्ट रिपोर्ट, इन्दिरा गाँधी इंस्टीट्यूट ऑफ डवलमेन्ट रिसर्च,

लंदन, ऑक्सफोर्ड यूनिवर्सिटी प्रेस.

- गोदिका, साधना (2005), प्राथमिक शिक्षा में जयपुर की कच्ची बस्ती के शिक्षार्थियों की भागीदारी : एक विश्लेषणात्मक अध्ययन, अप्रकाशित शोध प्रबन्ध, शिक्षा संकाय, वनस्थली विद्यापीठ, वनस्थली.
- गवर्नमेंट ऑफ इण्डिया (2007), एनुअल रिपोर्ट (2006–2007), डिपार्टमेंट ऑफ़ हायर एजुकेशन, मिनिस्ट्री ऑफ़ ह्यूमन रिसोर्स डेवलपमेंट, नडिपार्टमेंट ऑफ़ हायर एजुकेशन, न्यू देल्ही.
- गुप्ता, मंजू (2008), भारत में शिक्षा प्रणाली का विकास, के. एस. के. पब्लिशर्स एवं डिस्ट्रिब्यूटर्स, दरियागंज, नई दिल्ली.
- गुप्ता, एस.पी. व गुप्ता अलका (2010), भारतीय शिक्षा का इतिहास, विकास एवं समस्याएँ, शारदा पुस्तक भवन 11, यूनिवर्सिटी रोड़, इलाहाबाद.
- कमलेश, के. आर. (2014), कितना महान अपना राजस्थान, सोनू प्रकाशन, जयपुर.
- किंगडन, गीता गाँधी (2007), प्रोग्रेस ऑफ स्कूल एज्यूकेशन इन इण्डिया, डिपार्टमेन्ट ऑफ इकोनॉमिक्स, यूनिवर्सिटी ऑफ ऑक्सफोर्ड, 23 (2), 168–195.
- कुकरेती, बी. आर एण्ड सक्सेना, मनोज (2004, अ), ड्रॉप आऊट प्रोब्लम्स अमंग ट्राइबल स्टुडेण्ट्स एट स्कूल लेवल, कुरूक्षेत्र, 52 (11), 26–30.
- कुकरेती, बी. आर एण्ड सक्सेना, मनोज (2004, ब), प्राइमरी एड्यूकेशन इन यू.पी.: एन एनेलिटिकल स्टडी, ग्यान जर्नल ऑफ एड्यूकेशन, 1(1), 1–7.
- मैखुरी, रमा (2005), स्टेट्स ऑफ एलीमेन्ट्री एजुकेशन इन रूरल एरिया ऑफ चमौली डिस्ट्रिक्ट ऑफ उत्तरांचल, इंडियन एजुकेशनल एब्सट्रेक्ट्स (प्राइमरी एजुकेशन), एन.सी.ई.आर.टी., नई दिल्ली, वो. 8 नं. –1, जनवरी 2008, 35–36।
- मिनिस्ट्री ऑफ ह्यूमन रिसोर्स डवलमेन्ट (1993), एजूकेशनल फॉर ऑल द इण्डियन सीनः सेकेण्ड एडिशन, गवर्नमेन्ट ऑफ इण्डिया, मिनिस्ट्री ऑफ ह्यूमन रिसोर्स डवलमेन्ट, डिपार्टमेन्ट ऑफ एजूकेशन, न्यू देहली अक्टूबर
- मिश्रा, उपमा (2009), राजस्थान राज्य की प्राथमिक कक्षाओं में बालिका शाला परित्याग (ड्रॉप आउट) दर : एक प्रवृत्यात्मक विश्लेषण (2001–06), अप्रकाशित शोध अध्ययन, शिक्षा संकाय, वनस्थली विद्यापीठ, वनस्थली.
- एन.सी.ई.आर.टी. (1998), सिक्स्थ आल इंडिया एजुकेशनल सर्वे (1993–94), एन.सी.ई.आर.टी., न्यू देल्ही.
- एन.सी.ई.आर.टी. (2005), सेवंथ आल इंडिया एजुकेशनल सर्वे , प्रोविसिओनल स्टेटिस्टिक्स एज ओन सितम्बर 30, 2002. एन.सी.ई.आर.टी., न्यू देल्ही.
- एन.सी.ई.आर.टी. (2006), नेशनल फोकस ग्रुप ओन अर्ली चाइल्डहुड एजुकेशन, पोजीशन पेपर, एन.सी.ई. आर.टी., न्यू देल्ही.
- नंदा, रेणु (2006), कंसर्न अबाऊट प्राइमरी एजुकेशन इन रूरल एरिया : एन इन डेप्थ स्टडी ऑफ राजौरी डिस्ट्रिक्ट (जम्मू एण्ड कश्मीर स्टेट), इंडियन एजुकेशनल एब्सट्रेक्ट्स (प्राइमरी एजुकेशन), एन.सी.ई.आर. टी, नई दिल्ली, वो. 34 नं.–4, फरवरी.
- न्यूपा (2006–07), डिस्ट्रिक्ट रिपोर्ट कार्ड, नेशनल यूनिवर्सिटी ऑफ एजूकेशनल प्लानिंग एण्ड एडमिनिस्ट्रेशन, न्यूदेहली.
- न्यूपा (2007), एजुकेशन इन इंडिया अट अ ग्लांस, नेशनल यूनिवर्सिटी ऑफ़ एजुकेशनल प्लानिंग एंड एडमिनिस्ट्रेशन, न्यू देल्ही.
- पाल, एस. पी. एंड पंत, डी. के. (1995), स्ट्रेटेजीज टू इम्प्रूव स्कूल एनरोलमेंट रेट इन इंडिया, जर्नल ऑफ़ एजुकेशनल प्लानिंग एंड एडमिनिस्ट्रेशन, 9 (2) 169–171.

- पाराशर, दीपशिखा (2011), राजस्थान राज्य में सर्वशिक्षा अभियान के अन्तर्गत बालिका शिक्षा हेतु किए जाने वाले प्रयास : एक प्रवृत्यात्मक अध्ययन (2005–2010) अप्रकाशित शोध अध्ययन (पीएच.डी.), शिक्षा संकाय, वनस्थली विद्यापीठ, वनस्थली.
- प्रधान, जी.सी. (2009), ए स्टडी ऑन ग्रोथ एण्ड प्रजेन्ट स्टेटस ऑफ एलीमेन्टरी एजुकेशन इन गोवा, जर्नल ऑफ इंडियन एजुकेशन, एन.सी.ई.आर.टी, नई दिल्ली, 34, (4), फरवरी, 90–112.
- प्रकाश, एस. (1996), भारत में प्रारम्भिक शिक्षा का सार्वजनीनकरण, समस्यायें और संभावनायें, परिप्रेक्ष्य – शैक्षिक योजना और प्रशासन का सामाजिक–आर्थिक संदर्भ, नीपा, नई दिल्ली, 3 (2).
- शर्मा, अनुसूया (2010), कोटा संभाग में पारम्परिक संस्कृत शिक्षा के विकास (1990 से 2008–09) का अध्ययन, अप्रकाशित शोध प्रबन्ध (पीएच.डी.), वनस्थली विद्यापीठ.
- सिंह, के. आई. (1997), ए क्रिटिकल स्टडी ऑफ द डेवलपमेन्ट ऑफ प्राइमरी एजुकेशन इन द नॉर्थ–इस्टर्न रीजन ऑफ इंडिया विद स्पेशल रेफरेन्स टू मणिपुर, पीएच.डी. 414.
- सिन्हा, ए एण्ड सिन्हा, ए.के. (1995) प्राइमरी स्कूलिंग इन नार्थ इंडिया : अ फील्ड इन्वेस्टीगेशन, सेंटर फॉर सस्टेनेबल डेवलपमेंट, लाल बहादुर शास्त्री नेशनल अकादमी ऑफ़ एडमिनिस्ट्रेशन, मसूरी.
- स्टेट इंस्टीट्यूट ऑफ एजूकेशनल रिसर्च एण्ड ट्रेनिंग, सिक्सथ ऑल इण्डिया एजूकेशनल सर्वे स्टेट रिपोर्ट (राजस्थान), स्टेट इंस्टीट्यूट ऑफ एजूकेशनल रिसर्च एण्ड ट्रेनिंग, उदयपुर, राजस्थान.
- सुराणा, अजय (2003), राजस्थान के एक जिले में शैक्षिण विकास का पार्श्व चित्र 1981–2000, एक अध्ययन, अप्रकाशित शोध प्रबन्ध (पीएच.डी.), वनस्थली विद्यापीठ, वनस्थली (राज.).
- तिलक, जन्धपाल बी. जी. (2004), अपर प्राइमरी एजूकेशन इन इंडिया : पूअरटी एण्ड डवलपमेंट, इन्टरनेशनल जर्नल ऑफ एज्यूकेशनल डवलपमेन्ट, 27 (4), जुलाई, 435–445.